P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

बिहार राज्य की जनसंख्या संकेन्द्रण, घनत्व का अवलोकन

रिंकी कुमारी
गेस्ट असिस्टेंट प्रोफेसर,
अर्थशास्त्र विभाग
वीमेन्स कॉलेज समस्तीपुर,
ल0ना0मि0वि0वि,
दरभंगा, बिहार, भारत

सारांश

भारत संसार का दूसरा सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश है। भारत की कुल जनसंख्या 102.7 करोड़ (2001) है, जो संसार की कुल जनसंख्या का 16. 7 प्रतिशत है। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत विश्व का सातवां सबसे बड़ा देश है, इसका क्षेत्रफल विश्व के कुल क्षेत्रफल का मात्र 2.4 प्रतिशत है। इतनी विशाल जनसंख्या के सीमित संसाधन पर निर्भर होने के कारण अनेक सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक उलझनें पैदा होती हैं। विशाल जनसंख्या प्राकृतिक तथा मानव द्वारा निर्मित संसाधनों पर एक बोझ है। गरीबी और पर्यावरण का ह्रास वर्त्तमान भारत की दो प्रमुख समस्याएं हैं। इन समस्याओं का मुख्य कारण भी जनसंख्या की अधिकता ही है। जनसंख्या की विशालता के कारण नृजातीय विविधता, अत्यधिक ग्रामीण स्वरूप और असमान वितरण आदि अन्य पहलू हैं जो सामाजिक–आर्थिक विकास की प्रक्रिया और गति को प्रभावित कर रहे हैं।

मुख्य शब्द : जनसंख्या संकेन्द्रण, जनसंख्या घनत्व, जनसंख्या वितरण।

प्रस्तावना

बिहार राज्य परिप्रेक्ष्य में उत्तरी बिहार अपेक्षाकृत ज्यादा गहन जनसंख्या संकेन्द्रण, घनत्व का प्रदेश है, जहां राज्य के कुल क्षेत्रफल के 43.80 प्रतिशत पर 63.42 प्रतिशत जनसंख्या का संकेन्द्रण है। इसके विपरीत दक्षिणी बिहार प्रदेश में राज्य के 56.20 प्रतिशत क्षेत्रफल पर राज्य की 36.58 प्रतिशत जनसंख्या का घनत्व दर्शाता है। इसके अलावा राज्य के जिलों की 35.135 प्रतिशत आवृत्तियां कुल 51.94 प्रतिशत जनसंख्या के संकेन्द्रण को आकर्षित करता है। राज्य के 38 जिलों में से मात्र 13 जिलों में राज्य की लगभग 4.31 करोड़ जनसंख्या रहती है।

अध्ययन का उद्देश्य

बिहार राज्य के कुल जनसंख्या संकेन्द्रण घनत्व में असमानता है। कुछ जिलों में बहुत ज्यादा संकेन्द्रण है तो कुछ जिलों में विरल सकेन्द्रण है जनसंख्या संकेन्द्रण अधिक पटना का है और विरल शिवहर, शेखपुरा जिला का है।

उच्चतर जनसंख्या संकेन्द्रण क्षेत्र

बिहार राज्य के कुल क्षेत्रफल के मात्र 3.40 प्रतिशत (पटना जिला) पर राज्य की कुल जनसंख्या का 5.68 प्रतिशत निवास पाती है। पटना महानगर बिहार की राजधानी रही है। समकालीन नगरीकरण की प्रवृत्ति की अनुक्रिया में पटना आकर्षक प्रशासनिक, वाणिज्यिक, औद्योगिक, पर्यटन तथा सेवाकेन्द्र के रूप में पहचान बनाता है। स्वभावतः पटना जिला बिहार का सर्वाधिक उत्कृष्ट जनसंख्या संकेन्द्रण क्षेत्र रहा है।

उच्च जनसंख्या संकेन्द्रण क्षेत्र

उत्तरी बिहार के 11 एवं दक्षिणी बिहार के गया जिले के लगभग 39 प्रतिशत राज्य की भूमि पर कुल लगभग 46 प्रतिशत राज्य की जनसंख्या का संकेन्द्रण सूचकांक 3.00 एवं 5.00 के बीच है। कृषि आधारित अर्थव्यवस्था की वरीयता का यह भाग उच्च जनसंख्या संकेन्द्रण क्षेत्र है। गया, मुजफ्फरपुर, पूर्णियां, हाजीपुर, बेतिया, मोतिहारी, छपरा, सिवान जैसे एक लाख से अधिक जनसंख्या के नगर/नगर पुंज की अवस्थिति भी संकेन्द्रण की तीव्रता में योगदान देती है।

मध्यम जनसंख्या संकेन्द्रण क्षेत्र

दक्षिणी बिहार के लखीसराय, शेखपुरा तथा उत्तरी बिहार के शिवहर जिलों को छोड़कर शेष 21 जिलों का समूह मध्यम जनसंख्या संकेन्द्रण क्षेत्र (सूचकांक 1.00–2.99) का प्रतिनिधित्व करता है। इस क्षेत्र में राज्य के 54.849 प्रतिशत क्षेत्रफल पर 45.840 प्रतिशत जनसंख्या का निवास है। कृषि कार्यों से सम्बन्धित कार्यों तथा भागलपुर, बिहारशरीफ, आरा, कटिहार, मुंगेर, सासाराम, सहरसा, डेहरी तथा बेगुसराय जैसे एक लाख से अधिक जनसंख्या के

नगर/नगर पुजों की अवस्थिति के कारण इस क्षेत्र में जनसंख्या संकेन्द्रण की सकारात्मक प्रवृत्ति रही है।

लघु जनसंख्या संकेन्द्रण क्षेत्र

आकार में छोटे तथा किसी भी बड़े नगर की अनुपस्थिति के कारण लखीसराय, शेखपुरा तथा शिवहर जिले राज्य के क्षेत्रफल के मात्र 2.476 प्रतिशत तथा जनसंख्या के मात्र 2.22 प्रतिशत के लिए उत्तरदायी हैं। इस क्षेत्र में जनसंख्या संकेन्द्रण सूचकांक 0.60 से 0.97 के बीच है।

तालिका–01

बिहार में जनसंख्या संकेन्द्रण सूचकांक

जनसंख्या संकेन्द्रण सूचकांक वर्ग	जिलों की आवृत्ति	जिला (संकेन्द्रण सूचकांक)
5.00 और ऊपर	1 (कुल आवृत्ति का 2.702 प्रतिशत)	पटना (5.68)
4.00–4.99	5 (कुल आवृत्ति का 13.513 प्रतिशत)	समस्तीपुर (4.12), गया (4.18), मधुबनी (4.31), मुजफ्फरपुर (4.52), पू0 चम्पारण (4.75)
3.00–3.99	7 (कुल आवृत्ति का 18.919 प्रतिशत)	पूर्णियां (3.07), सीतामढ़ी (3.22), सिवान (3.27), वैशाली (3.27), प0चम्पारण (3.67) , सारण (3.92), दरभंगा (3. 96)
2.00–2.99	11 (कुल आवृत्ति का 29.731 प्रतिशत)	सुपौल (2.11), नवादा (2.18), औरंगाबाद (2.42), अररिया (2.56), गोपालगंज (2.59), भोजपुर (2.69), बेगुसराय (2. 83), नालंदा (2.86), कटिहार (2.88), भागलपुर (2.93), रोहतास (2.95).
1.00–1.99	10 (कुल आवृत्ति का 27.027 प्रतिशत)	मुंगेर (1.37), खगड़िया (1.54), कैमूर (1.55), किषनगंज (1.56), जमुई (1.69), बक्सर (1.69), सहरसा (1.82), जहानाबाद (1.82), मधेपुरा (1.84), बांका (1.94)
1.00 से नीचे	3 (कुल आवृत्ति का 8.108 प्रतिशत)	शिवहर (0.62), शेखपुरा (0.63), लखीसराय (0.97)

भारत की जनसंख्या **1027015247** **बिहार में जनसंख्या संकेन्द्रण**
बिहार की जनसंख्या **82878796** **सूचकांक** (8.07)

जनसंख्या घनत्व का वितरण

किसी राज्यक्षेत्रीय खण्ड की जनसंख्या के स्थानिक संगठन का प्रभावी प्रदर्शन माना गया है। वास्तव में, जनसंख्या घनत्व प्रति इकाई क्षेत्रफल के संदर्भ मे व्यक्तियों की संख्या के अनुरूप जनसंख्या के स्थानिक संगठन की सापेक्ष अभिव्यक्ति है। जनसंख्या के स्थानिक संगठन में स्वभावतः जनसंख्या घनत्व पर आधारित वितरण प्रारूप निरपेक्ष या वास्तविक जनसंख्या पर आधारित वितरण प्रारूप से भिन्न होता है, क्योंकि किसी छोटे क्षेत्रफल की एक बड़ी जनसंख्या किसी बड़े क्षेत्रफल के अपेक्षाकृत छोटी जनसंख्या से निरपेक्ष संदर्भ में छोटी हो सकती है, जबकि जनसंख्या घनत्व की दृष्टि से इसका स्थान ऊपर हो सकता है।

तालिका–02

बिहार राज्य में जनसंख्या घनत्व पर आधारित वितरण प्रारूप

जनसंख्या घनत्व वर्ग	जिलों की आवृत्ति	जिला (घनत्व, व्यक्ति प्रति वर्ग कि0मी0)
1250 और ऊपर	3 (कुल आवृत्ति का 8.108 प्रतिशत)	पटना (1471), दरभंगा (1442), वैशाली (1332)
1000–1249	10 (कुल आवृत्ति का 27.027 प्रतिशत)	सारण (1231), बेगुसराय (122), सिवान (1221), सीतामढ़ी (1214), मुजफ्फरपुर (1180),समस्तीपुर (1175), शिवहर (1161), गोपालगंज (1057), मधुबनी (1020), नालन्दा (1006)
750–999	13 (कुल आवृत्ति का 35.136 प्रतिशत)	पू0 चम्पारण (991), जहानाबाद (963), भागलपुर (946), भोजपुर (903), सहरसा (885), बक्सर (864), खगड़िया (859), मधेपुरा (853), मुंगेर (800), पूर्णिया (787), कटिहार (782), शेखपुरा (762), अररिया (751)
500–749	9 (कुल आवृत्ति का 24.324 प्रतिशत)	नवादा (726), सुपौल (724, गया (696), किशनगंज (687), लखीसराय (652), रोहतास (636), औरंगाबाद (607), प0चम्पारण (582), बांका (533)
500 से कम	02 (कुल आवृत्ति का 5.45 प्रतिशत)	जमुई (451), कैमूर (382)

भारत जनसंख्या घनत्व = 324, बिहार जनसंख्या घनत्व = 1102

जनसंख्या घनत्व की दृष्टि से बिहार राज्य के जिलों की अधिकांश आवृत्तियां (86.487 प्रतिशत) 500 से 1000 जनसंख्या घनत्व वर्गों में स्थान पाती है। भारत के 324 जनसंख्या घनत्व अनुमाप के संदर्भ में बिहार राज्य का जनसंख्या घनत्व अनुमाप दोगुना से ज्यादा 880 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 है, जो पश्चिम बंगाल के 904 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 के बाद दूसरे स्थान पर है। बिहार राज्य के पुनर्गठनका प्रभाव यहां के जनसंख्या घनत्व पर पाया जाता गया है। अविभाजित बिहार के जनसंख्या घनत्व का राज्यीय औसत 497 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0, जब बिहार खण्ड के लिए यह 685 था। पुनर्गठन के प्रभाव में राज्यीय औसम में प्रत्यक्ष वृद्धि देखी गई, क्योंकि झारखण्ड की तुलना में बिहार में अपेक्षाकृत कम क्षेत्रफल पर अधिक जनसंख्या का बसाव रहा है।

तालिका 02 में प्रविष्ट उप प्रादेशिक जनसंख्या घनत्व के आवृत्ति वितरण के विश्लेषण के अनुरूप बिहार राज्य के जनसंख्या संगठन में पांच वितरण प्रारूपों का उल्लेख किया जा सकता है–

उच्चतर जनसंख्या घनत्व के क्षेत्र (1250 और अधिक व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0)

पटना, दरभंगा तथा वैशाली जिलों से निर्मित राज्य के 7.930 प्रतिशत क्षेत्रफल के जनसंख्या घनत्व क्षेत्र में जनसंख्या घनत्व 1300 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 है, जो राज्य औसत से काफी अधिक है।

उच्चतर जनसंख्या घनत्व क्षेत्र (1000–1249 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0)

बिहार राज्य के उच्च जनसंख्या घनत्व क्षेत्र में सम्मिलित जिले इसके लगभग एक – चौथाई भाग के लिए उत्तरदायी है। इन जिलों में जनसंख्या घनत्व राज्य स्तर के औसत 880 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 से प्रत्यक्षतः अधिक हैं

उच्च तथा उच्चतर घनत्व क्षेत्र के विकास के पीछे निम्नलिखित अनुकूल परिस्थितियों का योगदान है– (क) भूमि की समतल तथा जलोढ़ मृदा प्रकृति कृषि पैदावार को प्रोत्साहित करती है। (ख) सतत् वाहिनी नदियों में पर्याप्त जल एवं सिंचाई सुविधा उपलब्ध है। (ग) प्रचुर चावल उत्पादन से युक्त कृषि अर्थव्यवस्था जनसंख्या सघनता को स्वाभाविक पोषक हे। (घ) नगरों की संख्यात्मक आवृत्ति एवं आकार अनुमाप तथा परिवहन सुविधाओं में विकास जनसंख्या सघनता को तीव्र करती है।

मध्यम जनसंख्या घनत्व क्षेत्र (750–949 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0)

मध्यम जनसंख्या घनत्व क्षेत्र का सर्वाधिक विस्तार है, अर्थात् लगभग 30.434 प्रतिशत राज्य क्षेत्र पर जनसंख्या घनत्व 750 से 949 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 है, जो राज्य स्तर पर औसत से थोड़ा कम और अधिक है। बिहार राज्य के इन जिलों में कृषि पिछड़ी है, बाढ़ की प्रतिकूल परिस्थिति है तथा कृषि परम्परागत तरीके से होती है और औद्योगीकरण तथा नगरीकरण की अल्प प्रवृत्ति है।

अल्प जनसंख्या घनत्व क्षेत्र (500–749 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0)

राज्य स्तरीय जनसंख्या घनत्व से निम्न घनत्व वाले जिले राज्य के लगभग 30 प्रतिशत भूमि को परिसीमित करते हैं। इस क्षेत्र का विस्तार मुख्यतः सीमान्तीय या परिधीय है।

अत्यल्प जनसंख्या घनत्व क्षेत्र (500 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 से कम)

जमुई और कैमूर बिहार के दो ऐसे जिले हैं, जहां जनसंख्या भार कम है। इन जिलों की जनसंख्या आकर्षण शक्ति कम है।

वास्तव में, अल्प एवं अत्यल्प जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्रों में कृषि कार्य की अनुकूलता अनुमाप में क्रमिक ह्रास पाया जाता है। जनसंख्या सघनता में कमी के मुख्य कारक हैं– (क) पहाड़ी एवं पठारी धरातलीय स्वरूप (ख) कृषि योग्य भूमि की अपेक्षाकृत कम उपलब्धि। (ग) जल संसाधन तथा सिंचाई सुविधाओं की कमी। (घ) मृदा की उर्वरता में कमी। (ङ) खनन एवं औद्योगिक कार्यों का अत्यल्प विकास। (च) निम्न स्तरीय नगरीकनरण प्रवृत्ति तथा अनुमाप।

निष्कर्ष

बिहार में जनसंख्या घनत्व की वृद्धि सामान्यतः तेज पायी गई है। जनगणना वर्ष के संदर्भ में 2001 जनगणना वर्ष में जनसंख्या घनत्व वृद्धि की विषेषताएं निम्न रही हैं– (क) बिहार राज्य स्तरीय जनसंख्या घनत्व की वृद्धि अनुमाप कुल 28.467 प्रतिशत का है। (ख) बिहार राज्य के कुल 37 जिला क्षेत्रों में से कुल 22 जिला क्षेत्रों के लिए जनसंख्या घनत्व का वर्द्धन अनुमाप राज्यीय औसत से अधिक (28.57 प्रतिशत से 36.107 प्रतिशत) के बीच रहा है। (ग) शेष जिला क्षेत्रों में राज्यीय औसत से कम (निम्नतम नालन्दा–19.632 तथा बांका–19.886 प्रतिशत के लिए) जनसंख्या घनत्व में वर्द्धन हुआ है। (घ) शिवहर (36.107), पूर्णिया (35.223), नवादा (33.221), सहरसा (33.083), जमुई (33.038), सीतामढ़ी (32.667) तथा पटना, दरभंगा, कटिहार, अररिया, औरंगाबाद, पश्चिमी चम्पारण तथा कैमूर (प्रत्येक में 30.00 प्रतिशत से अधिक) प्रधान जिले हैं, जहां जनसंख्या घनत्व का वर्द्धन उच्च अनुमापी रहा है। आकर्षक नगरीय वर्द्धन, नव जिलों का गठन तथा योजनापरान्त अर्थव्यवस्था में उन्नयन जैसे कारणों की भूमिका अहम् रही है।

सन्दर्भ सूची

डॉ. नंदेश्वर शर्मा–बिहार एक परिचय, वसुन्धरा प्रकाशन

टी0आर0 रातरे–सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र, गुरूघासी दास विश्वविद्यालय विलासपुर–भारत में लिंगानुपात का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (शोध प्रबन्ध)

माथुर आर0एन0 पापुलेशन एनालिसिस एंड स्टडीज प्रकाशन इलाहाबाद 1986

चन्द्रशेखर एस0–भारत की जनसंख्या समस्या नीति–मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ 1961

श्रीवास्तव ओ0एस0–आर्थिक एवं सामाजिक जनसंख्या सिद्धांत– विवेक प्रकाशन दिल्ली –1981

राजू राम कोचे (सहायक प्राध्यापक अर्थषास्त्र),षास0 नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय डोगरगढ़ (षोध प्रबन्ध)

डॉ. के0के0 एल0 दास–प्राध्यापक भूगोल, ल0ना0मि0वि0वि0, दरभंगा (शोध प्रबन्ध)

Agrawal S.N. (1977) India Population Problem, Tata Mcgrow hill Publication Co. Ltd. Bombay

साहित्य पब्लिकेशन, आगरा –बिहार एक परिचय